Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.07, July,2025

नाट्यशास्त्र में वर्णित प्रेक्षागृह निर्माण वैशिष्ट्य

*सर्वेश कुमार सिंह
शोधच्छात्र
संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्याल लखनऊ

****

शोधसार- *नाटक प्राचीन भारतीय जनमानस के जीवन का अभिन्न अंग रहा है। नाटक रंगमंच पर अभिनीत किये जाने की की विषय वस्तु है। यही कारण है कि रंगमंच के साथ उसका घनिष्ठ संबंध रहा है। भारतीय रंगमंच की यह झांकी लगभग 2000 साल पहले नाट्यशास्त्र के रूप में देखी जा सकती है जो आधुनिक समय में नाट्यकला, रंगमंच,नृत्यकला, संगीतकला, वास्तुशास्त्र को निरंतर पुष्पित पल्लवित कर रही है*

बीज-शब्द - प्रेक्षागृह, रंगपीठ, मत्तवारणी, रंगमण्डप, नेपथ्य, यवनिका, रंगशीर्ष,दारूकर्म, इत्यादि।

****

नाट्यशास्त्र केवल नाट्य ग्रंथ ही नहीं अपितु संगीत, कला, , नृत्य और अलंकारशास्त्र का भी प्राचीनतम और प्रमाणिक पथ प्रदर्शक ग्रंथ कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। नाट्यशास्त्र के द्वितीय अध्याय में प्रेक्षागृह निर्माण का विस्तृत वर्णन देखने को मिलता है। प्रारंभ में ही जिज्ञासु मुनियों के आग्रह पर भरतमुनि के द्वारा नाट्यमंडप या प्रेक्षागृह के निर्माण का वर्णन किया गया है। नाट्य उत्पत्ति का आरम्भ नाट्यमंडप से ही होता है। नाट्यमंडप का निर्माण मनमानी ढंग से नहीं करना चाहिए , ऐसा तो देवताओं के यहाँ होता है ,क्योंकि उनकी सारी क्रियाएं मानसिक होती हैं । किन्तु मनुष्य की स्थिति ऐसी नहीं है नाट्यमंडप निर्माण से पूर्व उसके विधि- विधान को जानना अत्यंत आवश्यक है।

देवानां मानसी सृष्टिर्गृहेषु पवनेषु च ।[1]
यत्नभावाद्विनिष्पन्नाः सर्वे भावास्तु मानुषा।।

नाट्यशास्त्र में नाट्यमंडप को दो प्रकार से विभाजित किया गया है, एक आकार- प्रकार की दृष्टि से और दूसरा प्रमाण के आधार पर। आकार के दृष्टिकोण से प्रेक्षागृह के तीन भेद होते हैं।

आकार की दृष्टि से नाट्यगृह विकृष्ट ,चतुरस्र ,त्र्यस्र तथा माप की दृष्टि से ज्येष्ठ ,मध्यम, और कनीय को मिलाकर नाट्यमंडप के नव भेद होते हैं। किंचित व्याख्याकारों के द्वारा ज्येष्ठ को ही विकृष्ट , मध्यम को चतुरस्र और अवर को ही त्र्यस्र कहा गया है । इस प्रकार इन मण्डपों की माप दो तरह से बताई गई है। हस्तात्मक और दंडात्मक।

प्रमाणमेषां निर्दिष्ट हस्तदण्डसामश्रयम् ।[2]

इस प्रकार नाट्यमंडप के कुल 18 भेदों का वर्णन मिलता है। माप के प्रकार का उल्लेख करते हुए कहा गया है।

अष्टाधिकं शतं ज्येष्ठं चतुःषष्टस्तु मध्यमम् ।[3]

कनीयस्तु तथा वेश्म हस्ता द्वात्रिंशदिष्यते ।।

ज्येष्ठ मंण्डप 108 हाथ का, मध्यम मंण्डप 64 हाथ का तथा कनीय मंण्डप के 32 हाथ होने के प्रमाण उल्लिखित मिलते हैं । ज्येष्ठ मंण्डप देवताओं के प्रयोग के लिए , मध्यम संज्ञक राजाओं तथा कनीय मंण्डप प्रजाजन के लिए होते हैं ।

इन सभी प्रकार के प्रेक्षागृहों में मध्यम कोटि के प्रेक्षागृह को श्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि इनमें वाद-संवाद और संगीत आसानी से सुनाई देते हैं।

प्रेक्षागृहाणां सर्वेषां तस्मान्मध्यममिष्यते।[4]
यावत् पाठ्यं च गेयं च तत्र श्रव्यतरं भवेत्।।

प्राचीन भारतीय मापन प्रणाली अत्यंत सुस्पष्ट और वैज्ञानिक है। सर्वप्रथम भरत के नाट्यशास्त्र में नाट्यमंडप के निर्माण हेतु नाप के आधार दिए हुए हैं। यह नाप की पद्धति इतनी सूक्ष्मता से दर्शायी गई है कि तिल मात्र का भी अंतर न पड़े।

8 अणु = 1 रज

8 रज = 1 बाल

8 बाल = 1 लिक्षा

8 लिक्षा = 1 यूका

8 यूका = 1 यव

8 यव = 1 अंगुली

24 अंगुली = 1 हस्त

4 हस्त = एक दण्ड

इस प्रकार अगुलियों की नाप आठ यव के बराबर है इसका वर्णन अर्थशास्त्र में है तथा नाट्यशास्त्र में भी **यवास्त्वष्टो तथाङ्गुलम्**[5] कहा गया है।

भूमि- परीक्षा - वास्तु प्रारंभ करने से पूर्व आयोजक को चाहिए की सबसे पहले भू-भाग का परीक्षण करके वास्तु शास्त्र के अनुसार मंडप बनाने की योजना बनायें। भूमि को साफ करके उसमें हल चलवा देना चाहिए, जिसमें पड़ीं हड्डियों , कपोलों ,कीलों से सुरक्षा हो सके। नाट्यमंण्डप हेतु ऐसी भूमि का चयन किया जाए जो समतल हो। जहाँ काली या स्वेत हो मिट्टी हो।

निवेशन(नींव) – भरत नाट्यशास्त्रानुसार ऐसा ज्ञात होता है कि नाट्यमंण्डप की नींव मूल नक्षत्र में देनी चाहिए। जब नींव दी जानी लगे तो अन्य उत्सवों के साथ ही शंख ,मृदंग ,पणव आदि अनेक वाद्य यंत्रों के साथ निर्घोष करना चाहिए।

भित्ति कर्म और स्तम्भ - कार्य आरंभ करके प्रथम भित्ति का निर्माण करना चाहिए। भित्ति निर्माण किन वस्तुओं से होता था इस पर विवाद है किंतु एक स्थान पर बैठने हेतु जो चबूतरे बने हैं, उसको इष्टिका से बनाने का निर्देष है। इस प्रकार यह अनुमानित है कि नाट्यमंडप की दीवार ईंटो या मिट्टी के गारे से बनती थी। मत्तवारणी की ऊँचाई को देखते हुए ऐसा ज्ञात होता है कि भित्ति की ऊँचाई कम से कम 18 फिट से कम नहीं होती होगी। भित्ति बनाने के पश्चात ही स्तम्भ खडे करने का निर्देष है।

भित्तिकर्मणि निवृत्तेस्तम्भानां स्थापनं तत्।[6]

स्तम्भ स्थापना का कार्य सूर्योदय के समय होना चाहिये। नाट्यमंण्डप के लिए प्रायः 24 खम्भे खडे किये जाते है। 4 खम्भे चारों कोनों पर, 10 प्रेक्षागृह हेतु , 4 रंगपीठ बनाने के लिए ,6 रंगशीर्ष हेतु।

नाट्यशास्त्र में इन स्तम्भों को ब्राह्मण ,क्षत्रिय ,वैश्य , और शूद्र की संज्ञा से कल्पित किया गया है। स्वस्ति वाचन के साथ बडी सावधानी से स्तम्भ उत्थापन का कार्य होना चाहिए। नाट्यमंचन करते समय दर्शकों के बीच खम्भे न आये इसके लिए भरत ने यह निर्देष किया है कि नाट्यमंण्डप को शैलगुहाकार बनाना चाहिए। उनके अनुसार खम्भे भित्ति के सीध में लगने चाहिए

नाट्यशास्त्र का अध्ययन करने से ऐसा ज्ञात होता है कि मत्तवारणी रंगपीठ के ऊपर ही बनायी जाती थी। रंगपीठ को बनाने के बाद ही मत्तवारणी बनायी जाती थी

रंगपीठस्य पार्श्वे तु कर्तव्या मत्तवारणी [7]

मत्तवारणी बरामदे के आकार की होती थी जो रंगपीठ या रंगशीर्ष के दोनो ओर बनाई जाती थी। यह रंगपीठ से ऊंची रहती थी। मत्तवारणी बनाने का विशेष प्रयोजन क्या है यह स्पष्ट नहीं हो पाया है। आधुनिक प्रेक्षागृहों में मत्तवारणी का स्थान शून्य है।

नाट्यमंण्डप - यह सीढ़ीनुमा ईटों का बनाया जाता था तथा इन सीढ़ियों पर काठ का प्रयोग किया जाता था। प्रत्येक सीढ़ी एक दूसरे से एक हाथ ऊंची रहती थी। इस प्रकार देखने से ऐसा ज्ञात होता है कि सीढ़ियों की आठ पंक्तियाँ प्रत्येक प्रकार के प्रेक्षाग्रह में बन सकती थी। कुछ इस प्रकार की सीढ़ियाँ सीतावेगा की गुफा के समक्ष बनी हुई प्राप्त होती हैं। इन पर बैठने के लिए लकड़ी के पीढ़े लगाये जाते थे। ऐसा अनुमान है कि रंगपीठ का धरातल प्रेक्षकों के बैठने के धरातल से ऊँचा होता था जिससे प्रत्येक दृश्य स्पष्ट रूप से दिखाई दे।

कार्य:शैलगुहाकार: द्विभूमिर्नाट्यमंडप:[8]

किंचित व्याख्याकार द्विभूमि का अभिप्राय दो मंजिला लगाते हैं, जो आधुनिक प्रेक्षाग्रहों में देखा जाता है

रंगमंण्डप - रंगमण्डप की भूमि को तीन भागों में बांटा गया है। रंगपीठ, रंगशीर्ष तथा नेपथ्य। रंगपीठ तथा रंगशीर्ष के पारस्परिक स्थानों पर विवाद है, परंतु यह स्पष्ट है कि नेपथ्य का स्थान जो पश्चिम है उसका द्वार रंगपीठ पर खुलना चाहिए। रंगपीठ के पिछले हिस्से में नेपथ्य होना चाहिए। नेपथ्य पात्रों के प्रयोग हेतु सीमित रहता था जिसमें पात्र स्वयं की साज-सज्जा करते थे।

नेपथ्य सूचिका दो भागों में विभक्त रहती थी जिसमे एक और पुरुष वस्त्र, अलंकार इत्यादि से आभूषित होते थे तथा दूसरी और स्त्रियाँ अपने आप को सजाती थी। नेपथ्य के विषय में आचार्य 'रेवा प्रसाद द्विवेदी' का विवरण मिलता है।

वेद्या विरस्तरत: कुर्याद् द्वौ भागौ तत्र पश्चिमे।[9]
नेपथ्य गृहमादिश्य पूर्वं भूयो द्विधा क्रमात् ।।

नेपथ्य से ही आकाशवाणी की क्रियाएं होती थी। नाट्यशास्त्र में रंगदेवता के पूजन का विधान मिलता है। ये सम्भवत: वही रंग देवता हैं जिनका वर्णन भारत के नाट्यशास्त्र में मिलता है। यदि यह धारणा ठीक है तो इन रंगदेवता के सिर की ओर रंगशीर्ष होना चाहिए तथा उनकी पीठ की ओर रंगपीठ होना चहिए।

इस प्रकार रंगपीठ ,नेपथ्य ,मत्तवारणी तथा रंगशीर्ष का सम्यक रूप से विधान हो जाने पर सबसे पहले वेदिका बनाने के लिए काली मिट्टी का प्रयोग करना चाहिए, जिसमें कंकड़, पत्थर आदि ना हो। इसकी सफाई के लिए हल चलाना चाहिए। पृथ्वी तृणरहित दर्पण की भाँति समतल हो। यह मछली के पीठ या कछुए की पीठ की भांति होनी चाहिए।

द्वार एवं खिड़कियां - प्रेक्षागृह में दो द्वार होते थे एक दक्षिण की ओर तथा दूसरा पूर्व की ओर। आपस्तंब स्रोत-सूत्र के अनुसार पूर्व का द्वार सांसारिक सुख तथा दक्षिण का द्वार पितृलोक के सौख्य का प्रदाता होता है। इसी कारण कदाचित पूर्व का द्वार मंण्डप में प्रवेश करने के लिए और दक्षिण का द्वार निकलने के लिए प्रयोग किया जाता है। आज प्राय: भारत के अधिकांश घरों में द्वार पूर्व की ओर होते हैं, जिससे प्रविष्ट होकर मंगल आदि कार्य संपन्न होते

हैं तथा दक्षिण की ओर से शव घर से बाहर निकालने की परम्परा रही है। नाट्यमंण्डप के अनुसार ऐसा ज्ञात होता है कि नेपथ्य से रंगपीठ आने के लिए दो द्वार होते थे। एक जिससे पात्र प्रवेश करते थे तथा दूसरा रंगमंच पर नाट्य विषयक वस्तु लाई जाती थी।

रंगस्याभिमुखं कार्यं द्वितीयं द्वारमेव तु[10]

प्रेक्षागृह में वायु प्रवेश हेतु खिड़कियों का प्रयोग किया गया है। नाट्यशास्त्र में यवनिका शब्द का प्रयोग मिलता है। ऐसा ज्ञात होता है कि नेपथ्य के द्वार में यवनिका का प्रयोग होता था । इसके साथ-साथ रंगमंच के समक्ष ही पर्दे का प्रयोग किया जाता था।

चित्रकर्म एवं सजावट - दीवारों पर लिपाई-पुताई हो जाने के बाद उन पर विविध प्रकार के चित्र बनाए जाते थे। अधिकतर पुरुष ,स्त्रियों के श्रृंगार प्रसाधक ललित चित्र एवं वृक्षों, गुल्मो, पर्वत, नदियों आदि के सुंदर दृश्य अंकित किये जाते थे। रंगमंण्डप के मुख को पर्वत की गुफा के समान बनाने का निर्देश प्राप्त होता है।

इसके लिए काष्ठ का प्रयोग किया जाता रहा होगा, इसलिए पात्रों के मुख से प्रतिध्वनि शब्द दूर तक प्रयाण करते हैं। नाट्यमंण्डप के प्रयोग में बहुधा काष्ठ का प्रयोग किया गया है। तोरण, लताएं, गवाक्ष ,अट्टालिका, शालभंजिका इत्यादि का प्रयोग निर्देशित है । रंगशीर्ष पर ही संगीतज्ञों का स्थान प्रतिष्ठित था। भरत के नाट्यशास्त्र का एक पूरा अध्याय विविध वाद्यों तथा नाटक में उनके व्यवहार पर है।

निष्कर्ष - नाट्यशास्त्र में दिये गए नाट्यमण्डप सम्बंधी तथ्य इसकी वैज्ञानिकता को दर्शाते हैं जो कहीं न कहीं वास्तुकला के स्वरुप का परिचायक है। प्राचीन भारतीय कला चिन्तन की गम्भीरता और रंगमंच की सम्पन्नता का विशद साक्ष्य है।

पाद टिप्पणी

1. प्रो. ब्रजमोहन चतुर्वेदी, नाट्यशास्त्र 2.22 , विद्यानिधि प्रकाशन,नई दिल्ली पृ. सं. 130
2. तदेव. 2.9 पृ. सं 126
3. तदेव. 2.10 पृ. सं 126
4. तदेव. 2.21 पृ. सं 129
5. राय गोविंद चन्द्र राय ,भरत नाट्य शास्त्र में नाट्यशालाओं के रूप, काशी मुद्रालय ,वाराणसी 1958 ,पृ. सं. 14
6. नाट्यशास्त्र 2.44 पृ.सं. 133
7. तदेव . 2.63 पृ.सं. 136
8. तदेव . 2.80 पृ.सं. 139
9. आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी, नाट्यानुशासनम् 1.63 ,कालिदास संस्थानम वाराणसी, 2008 ,पृ.सं. 15
10. नाट्यशास्त्र 2.97 पृ.सं. 142

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1 नाट्यशास्त्रम् , प्रो. बृजमोहन चतुर्वेदी, विद्यानिधि प्रकाशन,वाराणसी,2022, नईदिल्ली।
2 प्राचीन भारतीय नाट्यकला , मनमोहन घोष, काशी मुद्रणालय।
3 भरत नाट्यशास्त्र, विद्याविलास प्रेस, बनारस, 1932
4 द इंडियन स्टेज, हेमनाथ दासगुप्ता, कोलकाता।
5 भरत नाट्यशास्त्र में नाट्यशालाओं के रुप, डा. राय गोविन्द चन्द्र।
6 अभिनव नाट्यशास्त्र, पं सीताराम चतुर्वेदी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद काशी।

7 नाट्यशास्त्र, मन मोहन घोष, रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल।

8 नाट्यानुशासन ,आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी ,कालिदास संस्थानम, वाराणसी।

9 संस्कृत-हिन्दी कोष, वामन शिवराम आप्टे , चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी, 2018

10 संक्षिप्त नाट्यशास्त्र, राधावल्लभ त्रिपाठी , अछयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।

*Corresponding Author: Sarvesh Kumar Singh

E-mail: singhkavish556@gmail.com
Received: 04 June,2025; Accepted: 23July 2025. Available online: 30 July, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License